Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue March 2021 | Impact Factor 4.115

आधुनिक युग में मानव की समस्याओं का त्वरित वा प्रयोगात्मक मार्गदर्शक- श्रीमदभगवदगीता

MADHU SHARMA
Assistant Professor of Music (Vocal), Sanatan Dharma College, Ambala Cantt

सारांश

श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दुओं के पवित्रतम ग्रन्थों में से एक है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने गीता का सन्देश अर्जुन को सुनाया था। यह महाभारत के भीष्मपर्व के अन्तर्गत दिया गया एक उपनिषद् है। भगवत गीता में एकेश्वरवाद, कर्म योग, ज्ञानयोग, भक्ति योग की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है। श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है। श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रही है। अर्जुन की तरह ही हम सभी कभी-कभी अनिश्चय की स्थिति में या तो हताश हो जाते हैं और या फिर अपनी समस्याओं से विचलित होकर भाग खड़े होते हैं।

भगवद् गीता को 'गीतोपनिशद' भी कहा गया है। यह वैदिक ज्ञान का सार है और वैदिक साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपनिशद है। इसका उद्देश्य भी मनुश्य को सांसारिक मोह–माया से मुक्ति दिलवाकर उसके सभी साहित्क गुणों को जागृत करके उसे कर्त्तव्यनिष्ठ बनाना है। मनुष्य अपने मौलिक अस्तित्व को मोह त्याग कर अपने अलौकिक अस्तित्व व सृष्टि में उसके जन्म के मूल उद्देश्य की ओर अग्रसर हो सके इसलिए भगवान श्री कृष्ण ने सनातन कृति की सृष्टि अपने श्री मुख से की।

'श्रीमद्भगवद् गीता' को अगर सरल भाषा में श्री भगवान के मुख से गाई गई कृति हम कह सकते है। 'गीता' को हम संगीत से जोड़कर भी देख सकते है। भगवद् गीता भगवान के श्री मुख से निकली है। इसके सभी भलोक गेय है। इसकी संगीतात्मक अभिव्यक्ति के कारण ही यह धार्मिक पुस्तक मात्र हिन्दुओं की ही पुस्तक न होकर सम्पूर्ण विश्व के बुद्धिजीवियों का मन मोह लेती है। इसमे वर्णित निश्काम कर्म योग साधना ही हर धर्म का मुख्य उद्देश्य है यही कारण है कि हर धर्म व जाति का व्यक्ति इसके श्रवण–पाठन के बाद स्वयं को इससे जुड़ा हुआ अनुभव करता है।

भगवद्गीता की विषय वस्तु में पाँच मूल्य सभी की धारणा निहित है। सर्वप्रथम ईश्वर विज्ञान की और फिर जीवों के स्वरुप की चर्चा की गई हैं। भगवान के गुण, प्रभाव और मर्म का वर्णन जिस प्रकार भगवद् गीता में किया गया है, वैसा अन्य ग्रन्थों में मिलना कठिन है।

भगवद्गीता की विषय वस्तु ईश्वर तथा जीव से सम्बन्धित है। इसमें प्रकृति, काल तथा कर्म की व्याख्या है। भगवद्गीता से हमें यह अवश्य सीख लेना चाहिए कि ईश्वर क्या है, जीव क्या है, प्रकृति क्या है, दृयय जगत् क्या है। यह काल द्वारा किस प्रकार नियन्त्रित किया जाता है और

PURVA MIMAANSA

जीवों के कार्यकलाप क्या है? भगवद्गीता के इन पांच मूलभूत विशयों में इसक स्थापना की गई है कि भगवान अथवा ब्रह्म अथवा परमात्मा, सबसे श्रेश्ठ है।

उस परम् ब्रह्म की प्राप्ति के लिए मनुश्य को बुद्धि, मन तथा भारीर आदि सर्वस्व उसके चरणों में अर्पित करने पड़ते है। भगवद्गीता में स्वयं श्री कृष्ण ने कहा है।

''तद्बुद्धयस्तदात्मानस्त त्रिश्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृतिं ज्ञाननिर्धूत कल्मयाः।।''

अर्थात् जब मनुश्य को बुद्धि, मन, श्रद्धा तथा भारण सब कुछ भगवान् मे स्थिर हो जाते हैं, सभी वह पूर्णज्ञान द्वारा समस्त कल्मय से शुद्ध होता है और मुक्ति के पथ पर अग्रसर होता है।

इसी प्रकार की व्याख्या निम्न भलोक में भी की गई है

''बाह्यस्पर्शेश्वसक्तात्या बिन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्म योग युक्तात्मा सुख्मक्ष्यमश्नुते।।

अर्थात मुक्त पुरुष भौतिक इन्द्रिय सुख की ओर आकृश्ट नहीं होता, अपितु सदैव समाधि में रहकर अपने अन्तर का अनुभव करता है। इस प्रकार स्वरुप सिद्ध व्यक्ति परब्रह्म में एकाग्रचित होने के कारण असीम सुख भोगता है।

इस प्रकार बिना किसी इन्द्रिय सुख की ओर आकृश्ट हुए ही उस परम् सत्ता की प्राप्ति सम्भव है। भगवद्गीता को विशयवस्तु में पाँच मूल सत्यों का ज्ञान निहित है। सर्वप्रथम ईश्वर के विज्ञान की ओर फिर जीवों की स्वरुप स्थिति की विवेचना की गई है। ईश्वर का अर्थ नियन्ता है और जीवों का अर्थ है– नियन्त्रित। यदि जीव यह कहे कि वह नियन्त्रित नहीं है, अपितु स्वतन्त्र है तो समझो कि वह पागल है। जीव सभी प्रकार से, कम से कम .....जीवन में, तो नियन्त्रित है ही। अतएव भगवद्गीता की विशयवस्तु ईश्वर तथा जीव से सम्बन्धित है। इसमें प्रकृति, काल (समस्त ब्रह्माण्ड की कालावधि या प्रकृति का प्राकदय) तथा कर्म की भी व्याख्या है। यह दृश्य–जगत विभिन्न कार्यकलापों में ओतप्रोत है। सारे जीव भिन्न–भिन्न कार्यो में लगे हुए हैं। भगवद्गीता से हमें अवश्य सीखना चाहिए कि ईश्वर क्या है, जीव क्या है, प्रकृति क्या है, दृश्य जगत क्या है, वह काल द्वारा किस प्रकार नियन्त्रित किया जाता है, और जीवों के कार्यकलाप क्या है।

गीता का वैदिक ज्ञान की सर्वाधिक पूर्ण प्रस्तुति समझना चाहिए। वैदिक ज्ञान दिव्य स्त्रोतों से प्राप्त होता है, ओर स्वयं भगवान में पहला प्रबंधन किया था। भगवान् द्वारा कहे गये शब्द अपोरुशेय कहलाते है जिसका अर्थ है कि वे चार दोषों से युक्त संसारी व्यक्ति द्वारा कहे गये (पीरुपेय) भाब्दों से भिन्न होते हैं। संसारी पुरुष के दोष है– (1) वह .त्रुटियाँ अवश्य करता हैं (2) वह अनिवार्य रुप से भ्रमित होता है, (3) उसमें अन्यों को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है, तथा (4) वह अपूर्ण इन्द्रियों के कारण सीमित होता है। इन चार दोशों के कारण मुनष्य सर्वव्यापी ज्ञान विशयक पूर्ण सूचना नहीं दे पाता।

भगवान भी कहते हैं (भगवद्गीता)

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियों वैश्यास्तथा भूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्त राजर्शयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।।

इस तरह भवगवान् कहते हैं कि वैश्य, पतिता स्त्री या श्रमिक अथवा अधमयोनि को प्राप्त मनुष्य भी ईश्वर को पा सकता है। उसे अत्यधिक विकसित बुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती। बात यह है कि जो कोई भक्ति योग के सिद्धान्त को स्वीकार करता है, और परमेश्वर को जीवन के आश्रय तत्त्व के रुप में, सर्वोच्च लक्ष्य या चरम लक्ष्य के रुप में स्वीकार करता है, वह आध्यात्मिक आंकाशा में भगवान तक पहुँच सकता है। यदि कोई भगवद्गीता में बताये गये सिद्धान्तों को ग्रहण करता है, तो वह अपना जीवन पूर्ण बना सकता है और जीवन की सारी समस्याओं का स्थायी हल पाता है। यही भगवद्गीता का सार सर्वस्य है।

गीता का उद्धोधन आधुनिक युग की समस्याओं के लिए त्वरित एवं प्रयोगात्मक मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। वह मन की जटिलताओं को बाहर निकालने की राह दिखाती है तथा अति मानस की पूर्णता और मुक्तावस्था का दिग्दर्शन करती है। गीता कहती है कि यह रास्ता कुछ थोड़े लोगों के लिए ही नहीं है। इस रास्ते पर वे सब चल सकते हैं जिन्होंने जीवन की उलझनों से मुक्ति का मार्ग खोजा है। एक उम्र में जहां व्यक्ति अधिक से अधिक राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक भाक्तियों के प्रभाव के कारण स्वयं को बौना, नगण्य देखता है, वहां पर गीता आशा और खुशहाली का सन्देश प्रदान करती है। इसके लिए वह उसे जीवन के मार्ग का दिग्दर्शन कराती है, जो समाप्त हुए महत्व को उसे पुनः दिलाने की ओर ले जाती है। गीता व्यक्ति को सक्रिय जीवन का रास्ता चुनने का मार्गदर्शन करती है।

सन्दर्भ सूची

भगवद्गीता यथारुप, भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई।
श्रीमदभगवद्गीता – जय दयाल गोयन्दका, गीता प्रैस, गोरखपुर।
भगवद्गीता – स्वामी गीतानन्द जी महाराज, राधा प्रैस, दिल्ली।

PURVA MIMAANSA